CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव शास्त्र गुरु पूजन

शुद्ध ब्रह्म[1] परमात्मा शब्द ब्रह्म[2] जिनवाणि ।
शुद्धातम[3] साधकदशा नमो जोड़ जुग पाणि[4] ।

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरु समूह
अत्रावतरावतर संवौषट् इति आह्वानम अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो
भव भव वषट् । इति सन्निधिकरणं ।

---

१ आत्मा २ आत्मा का कथन करने वाले शब्द
३ शुद्धात्मा के प्राप्ति हेतु प्रयत्नावस्था में वर्तते
हुए आचार्योपाध्याय और साधु ४ दोनों हाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथाष्टक

जलम्

—:*:—

आशा की प्यास बुझाने को,
अब तक मृग तृष्णा में भटका।
जल समझ विषय विषभोगों को,
उनकी ममता में था अटका॥
लख सौम्य दृष्टि तेरी प्रभुवर,
समता-रस पीने आया हूँ।
इस जल ने प्यास बुझाई ना,
इस को लौटाने लाया हूँ।
ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यः जलम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंदनम्

—:*:—

क्रोधानल से जब जला हृदय,
चन्दन ने कोई न काम किया ।
तन को तो शान्त किया इसने,
मन को न मगर आराम दिया ।
सन्सार ताप से तप्त हृदय,
सन्ताप मिटाने आया हूँ ।
चरणों में चन्दन अर्पण कर,
शीतलता पाने आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यः चन्दनम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षतम्

—:*:—

अभिमान किया अब तक जड़पर,
अक्षय[1] निधि को ना पहिचाना ।
मैं जड़ का हूँ जड़ मेरा है यह,
सोच बना था मस्ताना ॥
क्षत[2] में विश्वास किया अबतक,
अक्षत[3] को प्रभुवर ना जाना ।
अभिमान की आन मिटाने को,
अक्षय निधि तुमको पहिचाना ॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्य अक्षतम् ।

---

१ कभी नाश न होने वाला आत्मा २ विनाशीक
३ अविनाशी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुष्पम्

दिन रात वासना में रह कर,
मेरे मन ने प्रभु सुख माना।
पुन्सत्व[1] गमाया पर प्रभुवर,
उसके छल[2] को न पहिचाना॥
माया ने डाला जाल प्रथम,
कामुकता ने फिर बाँध लिया।
उसका प्रमाण यह पुष्प बाण[3],
लाकरके प्रभुवर भेंट किया॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यः पुष्पम्।

१मुक्ति को प्राप्त कराने वाला सच्चा पुरुषार्थ।
२विषय भोगों की प्राप्ति में पुरुषार्थमाना।
३काव्य की भाषा में पुष्प को कामदेव के बाण की उपमा दी जाती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नैवेद्यम्

—:*:—

पर पुद्गल का भक्षण करके,
यह भूख मिटाना चाही थी ।
इस नागिन से बचने को प्रभु,
हर चीज बना कर खाई थी ॥
मिष्टान्न अनेक बनाये थे,
दिन रात भखे न मिटी प्रभुवर ।
अब संयम भाव जगाने को,
लाया हूँ ये सब थाली भर ॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यः नैवेद्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीपम्

—:*:—

पहिले अज्ञान मिटाने को,
दीपक था जग में उजियाला।
उससे न हुआ कुछ तब युग ने
बिजली का बल्ब जला डाला॥
प्रभु भेद-ज्ञान[1] की आंख न थी
क्या कर सकती थी वह ज्वाला।
यह ज्ञान है कि अज्ञान कहो
तुम को भी दीप दिखा डाला॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यः। दीपम्।

१अपने और पराये (आत्मा और जड़) की पहिचान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धूपम्

—:*:—

शुभ कर्म कमाऊं सुख होगा,
मैंने अब तक यह माना था ।
पाप कर्म को त्याग पुन्य को,
चाह रहा अपनाना था ॥
किन्तु समझ कर शत्रु[1] कर्म को,
आज जलाने आया हूँ ।
लेकर दशाँग यह धूप,
कर्म की धूम उड़ाने आया हूं ॥
ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यः धूपम् ।

१ समस्त शुभाशुभ कर्मों को ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain: Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फलम्

—:*:—

भोगों को अमृत फल जाना,
विषयों में निश दिन मस्त रहा ।
उनके संग्रह में हे प्रभुवर मैं,
व्यस्त[1] त्रस्त[2] अभ्यस्त[3] रहा ॥
शुद्धात्म प्रभा जो अनुपम फल,
मैं उसे खोजने आया हूँ ।
प्रभु सरस सुवासित ये जड़फल,
मैं तुम्हें चढ़ाने लाया हूँ ॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यः फलम् ।

१लीन २ दुखी ३ अनादिकालीन अभ्यासी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्घम्

—:*:—

बहु मूल्य जगत का वैभव यह
क्या हम को सुखी बना सकता
अरे पूर्णता पाने में क्या
इसकी है आवश्यकता
मैं स्वयं पूर्ण हूँ अपने में
प्रभु है [1]अनर्घ मेरी माया ।
बहु मूल्य द्रव्य मय अर्घ लिये ॥
अर्पण के हेतु चला आया ॥
ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यः अर्घम् ।

१ अमूल्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला ।

समय[1]सार जिनदेव है जिन प्रवचन जिनवाणि
नियमसार[2] निर्ग्रन्थ-गुरु करें कर्म की हानि
हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो
तुम को ना अब तक पहिचाना
अतएव पड़ रहे हैं प्रभुवर
चौरासी[3] के चक्कर खाना
करुणा-निधि तुमको समझ नाथ
भगवान भरोसे पड़ा रहा
भरपूर सुखी कर दोगे तुम
यह सोचे सन्मुख खड़ा रहा

१ शुद्धात्मा २ शुद्ध (निश्चय) चरित्र ३ चौरासी लाख योनियों में ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम वीतराग हो लीन स्वयं में,
कभी न मैंने यह जाना ।
तुम हो निरीह[1] जगसे कृत-कृत[2],
इतना ना मैंने पहिचाना ॥
प्रभु वीतराग की वाणी में,
जैसा जो तत्व दिखाया है ।
जो होना है सो निश्चित है,
केवल ज्ञानी ने गाया है ॥
उस पर तो श्रद्धा ला न सका,
परिवर्तन का अभिमान किया ।
बनकर पर का कर्ता अब तक,
सत् का न प्रभो सन्मान किया ॥

१ इच्छा रहित२ जिन्हें कुछ करना बाकी न रहा हो उन्हें कृत-कृत कहते हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान तुम्हारी वाणी में,
जैसा जो तत्व दिखाया है ।
स्याद्वाद नय अनेकान्त मय,
समयसार[1] समझाया है ॥
उस पर तो ध्यान दिया न प्रभो,
विकथा में समय गमाया है ।
शुद्धात्म रुचि न हुई मन में,
ना मन को उधर लगाया है ॥
मैं समझ न पाया था अब तक,
जिनवाणी किसको कहते हैं ।
प्रभु वीतराग की वाणी में,
कैसे क्या तत्व निकलते हैं ॥

१शुद्धात्मा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राग धर्म मय धर्म राग मय,
अब तक ऐसा जाना था।
शुभ कर्म कमाते सुख होगा,
बस अब तक ऐसा माना था॥

पर आज समझ में आया है,
कि वीतरागता धर्म अहा।
राग-भाव में धर्म मानना,
जिन मत में मिथ्यात्व कहा॥

वीतरागता की पोषक ही,
जिनवाणी कहलाती है।
यह है मुक्ति का मार्ग निरन्तर,
हम को जो दिख लाती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस वाणी के अन्तर्तम को,
जिन गुरुओं ने पहिचाना है ।
उन गुरुवर्यों के चरणों में,
मस्तक बस हमें झुकाना है ॥

दिन रात आत्मा का चिन्तन,
मृदु सम्भाषण में वही कथन ।
निर्वस्त्र दिगम्बर काया से भी,
प्रगट हो रहा अन्तर्मन ॥

निर्ग्रन्थ दिगम्बर सद्ज्ञानी,
स्वातम में सदा विचरते जो ।
ज्ञानी ध्यानी समरससानी,
द्वादश विधि तप नित करते जो ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चलते फिरते सिद्धों से गुरु,
चरणों में शीश झुकाते हैं ।
हम चले आपके कदमों पर,
नित यही भावना भाते हैं ॥
हो नमस्कार शुद्धातम को,
हो नमस्कार जिनवर वाणी ।
हो नमस्कार उन गुरुओं को,
जिन की चर्या सम-रस सानी ॥

दर्शन दाता देव हैं, आगम सम्यग्ज्ञान ।
गुरु-चारित्र की खानि है मैं बंदौं धरिध्यान ॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यः महार्घम् ।

❀ समाप्तम् ❀

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

—देव स्तुति—

दोहा।

आलोकित हो लोक में, प्रभु परमात्म प्रकाश।
आनन्दामृत पानकर, मिटे सभी की प्यास ॥१॥

—:पद्धरी छन्दः—

जय ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप, तुमहो अनन्त चैतन्यरूप
तुम हो अखंड आनन्द पिण्ड, मोहारि दलन को तुमप्रचंड
प्रभु भवदधि यह गहरो अपार, बहते जाते सबनिराधार
तुमने बतलाया है अवार, कैसे होवें संसार पार ॥३॥
प्रभु शिव रमणी के हृदयहार, तुमने बतलाया तत्वसार
पाया मैं, ना उसको पिछान, उल्टा ही मैंने लिया मान
चेतनको जड़मय लिया जान, तनमें अपनापा लियामान
शुभ-अशुभ रागजो दुःखखान, उसमेंमाना आंनद महान
प्रभु अशुभ कर्म को मान हेय, माना पर शुभको उपादेय
जो धर्मध्यान आनन्द रूप उसको माना मैं दुःख स्वरूप
मनवांछित चाहे नित्यभोग, उनको ही माना है मनोग
इच्छा निरोधको नहींचाह, कैसे मिटता भव विषयदाह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकुलतामय संसार सुःख; जो निश्चय से है महा दुःख
उसकीही निश दिन करी आश, कैसे कटता संसारपास
भव दुखका परको हेतुजान, परसेही सुखको लिया मान
मैं दानदिया अभिमानठान, उसके फलपर न दियाध्यान
पूजा कीनी वरदान मांग, कैसे मिटता संसार स्वांग
तेरा स्वरूप लख प्रभु आज, होगये सफल संपूर्ण काज
मो उर प्रगटयो प्रभु भेदज्ञान, मैंने तुमको लीना पिछान
तुम परके कर्ता नहीं नाथ,ज्ञाता हो सबके एक साथ
तुम भक्तों को कुछ नही देत, अपने समान बस बनालेत
यह मैंने तेरी सुनी आन,जो लेवे तुमको बस पिछान
वह पाता है केवल्यज्ञान, होता परिपूर्ण कलानिधान
मेरे मनमें बस यही चाह निजपदको पाऊं हे जिनाह

दोहा ।

परका कुछ नहीं चाहता, चाहूं अपना भाव ।
निज स्वभाव में थिर रहूं, मेटो सकल विभाव ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi